



Rajiv lochan agarwal

21 Aug 1982

09:55 PM

Ramgarh

Model: Web-MyKundli

Order No: 121572101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/08/1982
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 21:55:00 घंटे
इष्ट _____: 41:13:22 घटी
स्थान _____: Ramgarh
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:32:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:12:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 22:07:08 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:14 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:05:48 घंटे
सूर्योदय _____: 05:25:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:16:06 घंटे
दिनमान _____: 12:50:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 04:40:11 सिंह
लग्न के अंश _____: 16:59:03 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: उ०फाल्गुनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: साध्य
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: पी-पीयूष
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1904	श्रावण	30
पंजाबी	संवत : 2039	भाद्रपद	6
बंगाली	सन् : 1389	भाद्रपद	4
तमिल	संवत : 2039	आवनी	5
केरल	कोल्लम : 1158	चिंगम	5
नेपाली	संवत : 2039	भाद्रपद	5
चैत्रादि	संवत : 2039	भाद्रपद	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2039	भाद्रपद	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 25:35:36
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:09:39 घंटे
जन्म योग _____ : उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 16:24:26 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 14:21:14 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 51:57:06
भभोग _____ : 57:33:42
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 0 वर्ष 6 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____ : भाद्रपद
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : श्रवण
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : मेष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : वृष
बुध _____ : मीन
गुरु _____ : मिथुन
शुक्र _____ : कर्क
शनि _____ : मीन
राहु _____ : सिंह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

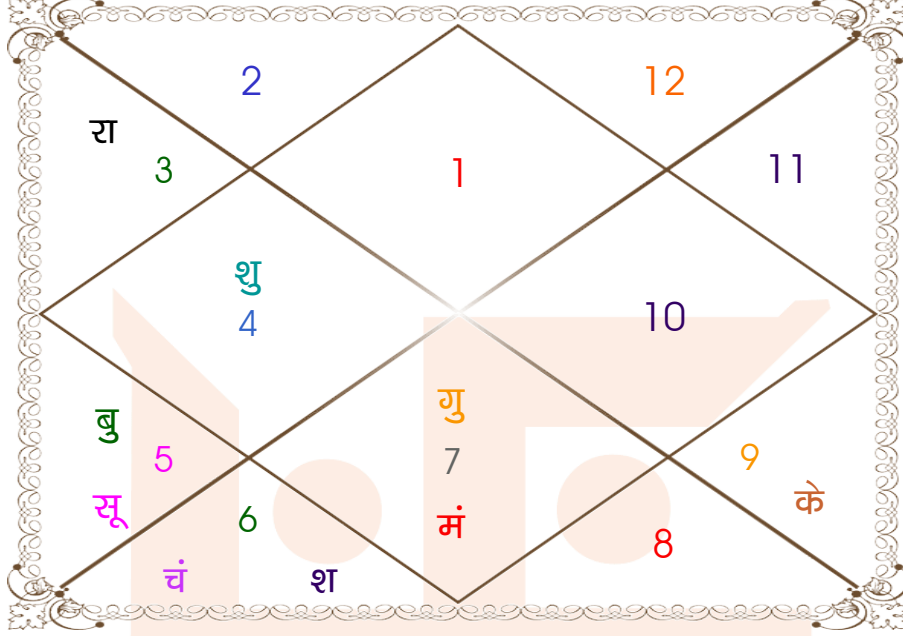
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

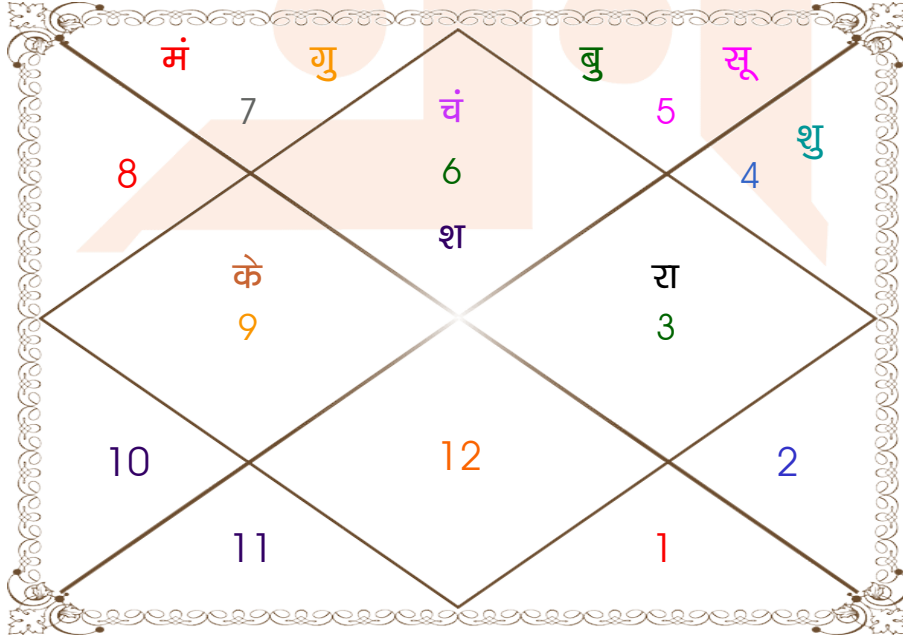
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	ल		रा
			शु
			बु सू
के		गु मं	श चं

लग्न कुंडली

		ल	
रा			
	शु		
सू बु	चं श	मं गु	के

विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 6मा 28दि
सूर्य

21/08/1982

20/03/2097

सूर्य	20/03/1983
चन्द्र	20/03/1993
मंगल	20/03/2000
राहु	20/03/2018
गुरु	20/03/2034
शनि	20/03/2053
बुध	20/03/2070
केतु	20/03/2077
शुक्र	20/03/2097

योगिनी
सिद्धा 0वर्ष 8मा 2दि
संकटा

24/04/2019

24/04/2027

संकटा	02/02/2021
मंगला	24/04/2021
पिंगला	03/10/2021
धान्या	04/06/2022
भ्रामरी	24/04/2023
भद्रिका	03/06/2024
उल्का	03/10/2025
सिद्धा	24/04/2027

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

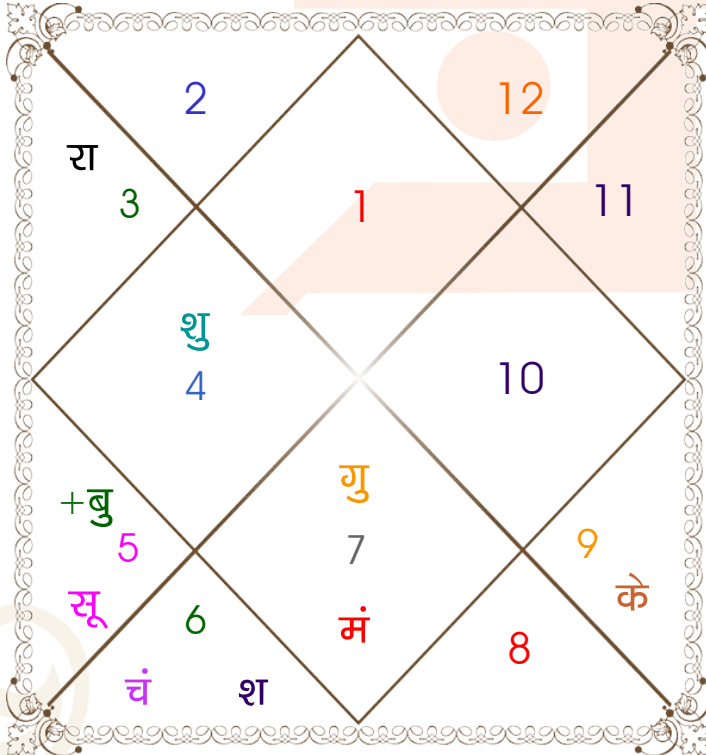
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	16:59:03	431:25:16	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	---
सूर्य			सिंह	04:40:11	00:57:49	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			कन्या	08:43:01	13:44:31	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			तुला	17:13:26	00:37:12	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
बुध			सिंह	27:33:29	01:27:10	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
गुरु			तुला	10:58:38	00:08:27	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	15:12:49	01:13:29	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	शत्रु राशि
शनि			कन्या	25:04:02	00:05:30	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	18:46:06	00:07:04	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	उच्च राशि
केतु	व		धनु	18:46:06	00:07:04	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	07:01:51	00:00:38	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
नेप	व		धनु	00:43:31	00:00:29	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	---
प्लूटो			तुला	01:08:38	00:01:32	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
दशम भाव			मक	05:40:54	--	उत्तराषाढा	--	21	शनि	सूर्य	बुध	--

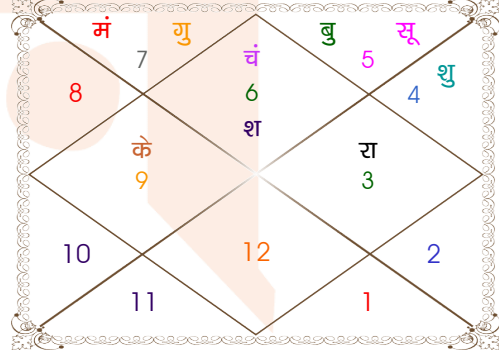
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:36:36

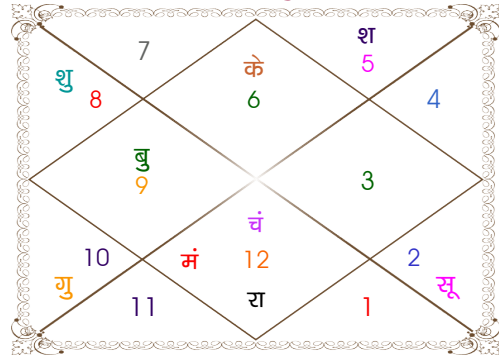
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 00:06:02	मेष 16:59:03
2	वृष 00:06:02	वृष 13:13:00
3	वृष 26:19:59	मिथुन 09:26:57
4	मिथुन 22:33:56	कर्क 05:40:54
5	कर्क 22:33:56	सिंह 09:26:57
6	सिंह 26:19:59	कन्या 13:13:00
7	तुला 00:06:02	तुला 16:59:03
8	वृश्चिक 00:06:02	वृश्चिक 13:13:00
9	वृश्चिक 26:19:59	धनु 09:26:57
10	धनु 22:33:56	मकर 05:40:54
11	मकर 22:33:56	कुम्भ 09:26:57
12	कुम्भ 26:19:59	मीन 13:13:00

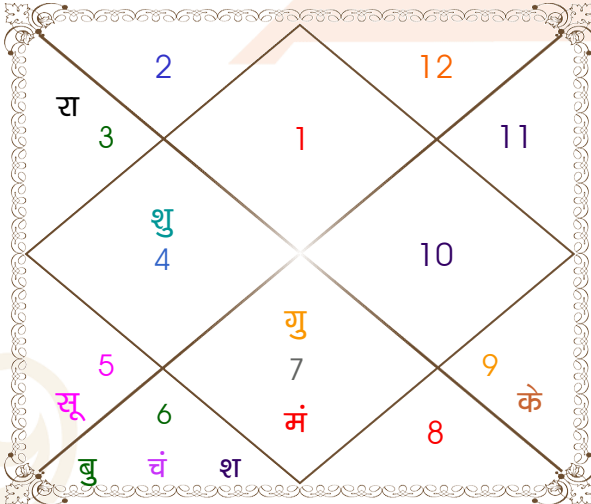
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	16:59:03
2	वृष	16:14:35
3	मिथुन	11:02:44
4	कर्क	05:40:54
5	सिंह	03:48:03
6	कन्या	08:11:30
7	तुला	16:59:03
8	वृश्चिक	16:14:35
9	धनु	11:02:44
10	मकर	05:40:54
11	कुम्भ	03:48:03
12	मीन	08:11:30

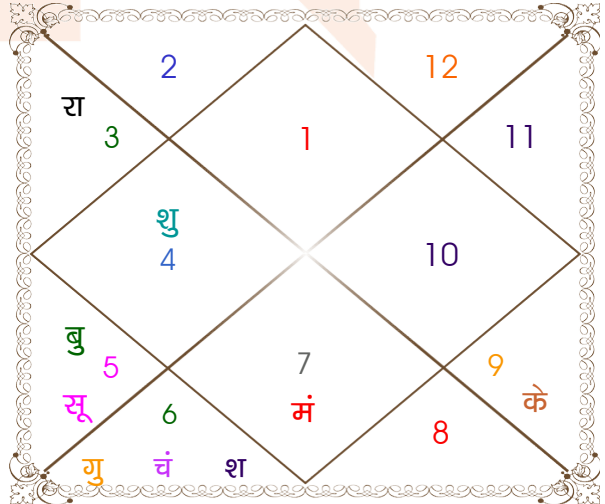
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 6 मास 28 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
21/08/1982	20/03/1983	20/03/1993	20/03/2000	20/03/2018
20/03/1983	20/03/1993	20/03/2000	20/03/2018	20/03/2034
00/00/0000	चंद्र 19/01/1984	मंगल 16/08/1993	राहु 01/12/2002	गुरु 07/05/2020
00/00/0000	मंगल 19/08/1984	राहु 03/09/1994	गुरु 25/04/2005	शनि 19/11/2022
00/00/0000	राहु 18/02/1986	गुरु 10/08/1995	शनि 01/03/2008	बुध 23/02/2025
00/00/0000	गुरु 20/06/1987	शनि 18/09/1996	बुध 19/09/2010	केतु 30/01/2026
00/00/0000	शनि 18/01/1989	बुध 15/09/1997	केतु 07/10/2011	शुक्र 30/09/2028
00/00/0000	बुध 19/06/1990	केतु 12/02/1998	शुक्र 07/10/2014	सूर्य 20/07/2029
00/00/0000	केतु 18/01/1991	शुक्र 14/04/1999	सूर्य 01/09/2015	चंद्र 19/11/2030
21/08/1982	शुक्र 18/09/1992	सूर्य 19/08/1999	चंद्र 02/03/2017	मंगल 25/10/2031
शुक्र 20/03/1983	सूर्य 20/03/1993	चंद्र 20/03/2000	मंगल 20/03/2018	राहु 20/03/2034

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
20/03/2034	20/03/2053	20/03/2070	20/03/2077	20/03/2097
20/03/2053	20/03/2070	20/03/2077	20/03/2097	22/08/2102
शनि 23/03/2037	बुध 16/08/2055	केतु 16/08/2070	शुक्र 19/07/2080	सूर्य 07/07/2097
बुध 01/12/2039	केतु 13/08/2056	शुक्र 16/10/2071	सूर्य 20/07/2081	चंद्र 06/01/2098
केतु 09/01/2041	शुक्र 14/06/2059	सूर्य 21/02/2072	चंद्र 20/03/2083	मंगल 14/05/2098
शुक्र 10/03/2044	सूर्य 19/04/2060	चंद्र 21/09/2072	मंगल 19/05/2084	राहु 08/04/2099
सूर्य 20/02/2045	चंद्र 18/09/2061	मंगल 17/02/2073	राहु 20/05/2087	गुरु 25/01/2100
चंद्र 22/09/2046	मंगल 16/09/2062	राहु 08/03/2074	गुरु 18/01/2090	शनि 07/01/2101
मंगल 01/11/2047	राहु 04/04/2065	गुरु 12/02/2075	शनि 20/03/2093	बुध 13/11/2101
राहु 07/09/2050	गुरु 11/07/2067	शनि 23/03/2076	बुध 19/01/2096	केतु 21/03/2102
गुरु 20/03/2053	शनि 20/03/2070	बुध 20/03/2077	केतु 20/03/2097	शुक्र 22/08/2102

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 0 वर्ष 7 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र 30/01/2026 30/09/2028	गुरु - सूर्य 30/09/2028 20/07/2029	गुरु - चंद्र 20/07/2029 19/11/2030	गुरु - मंगल 19/11/2030 25/10/2031	गुरु - राहु 25/10/2031 20/03/2034
शुक्र 12/07/2026 सूर्य 29/08/2026 चंद्र 19/11/2026 मंगल 14/01/2027 राहु 09/06/2027 गुरु 17/10/2027 शनि 20/03/2028 बुध 05/08/2028 केतु 30/09/2028	सूर्य 15/10/2028 चंद्र 08/11/2028 मंगल 25/11/2028 राहु 08/01/2029 गुरु 16/02/2029 शनि 03/04/2029 बुध 15/05/2029 केतु 01/06/2029 शुक्र 20/07/2029	चंद्र 29/08/2029 मंगल 27/09/2029 राहु 09/12/2029 गुरु 12/02/2030 शनि 30/04/2030 बुध 08/07/2030 केतु 05/08/2030 शुक्र 25/10/2030 सूर्य 19/11/2030	मंगल 08/12/2030 राहु 29/01/2031 गुरु 15/03/2031 शनि 08/05/2031 बुध 25/06/2031 केतु 15/07/2031 शुक्र 10/09/2031 सूर्य 27/09/2031 चंद्र 25/10/2031	राहु 05/03/2032 गुरु 30/06/2032 शनि 16/11/2032 बुध 20/03/2033 केतु 10/05/2033 शुक्र 03/10/2033 सूर्य 16/11/2033 चंद्र 28/01/2034 मंगल 20/03/2034
शनि - शनि 20/03/2034 23/03/2037	शनि - बुध 23/03/2037 01/12/2039	शनि - केतु 01/12/2039 09/01/2041	शनि - शुक्र 09/01/2041 10/03/2044	शनि - सूर्य 10/03/2044 20/02/2045
शनि 10/09/2034 बुध 13/02/2035 केतु 18/04/2035 शुक्र 18/10/2035 सूर्य 12/12/2035 चंद्र 12/03/2036 मंगल 16/05/2036 राहु 27/10/2036 गुरु 23/03/2037	बुध 09/08/2037 केतु 05/10/2037 शुक्र 18/03/2038 सूर्य 06/05/2038 चंद्र 27/07/2038 मंगल 23/09/2038 राहु 17/02/2039 गुरु 28/06/2039 शनि 01/12/2039	केतु 25/12/2039 शुक्र 01/03/2040 सूर्य 21/03/2040 चंद्र 24/04/2040 मंगल 18/05/2040 राहु 17/07/2040 गुरु 09/09/2040 शनि 12/11/2040 बुध 09/01/2041	शुक्र 21/07/2041 सूर्य 16/09/2041 चंद्र 22/12/2041 मंगल 27/02/2042 राहु 20/08/2042 गुरु 21/01/2043 शनि 23/07/2043 बुध 03/01/2044 केतु 10/03/2044	सूर्य 28/03/2044 चंद्र 26/04/2044 मंगल 16/05/2044 राहु 07/07/2044 गुरु 22/08/2044 शनि 16/10/2044 बुध 04/12/2044 केतु 25/12/2044 शुक्र 20/02/2045
शनि - चंद्र 20/02/2045 22/09/2046	शनि - मंगल 22/09/2046 01/11/2047	शनि - राहु 01/11/2047 07/09/2050	शनि - गुरु 07/09/2050 20/03/2053	बुध - बुध 20/03/2053 16/08/2055
चंद्र 10/04/2045 मंगल 13/05/2045 राहु 08/08/2045 गुरु 24/10/2045 शनि 24/01/2046 बुध 16/04/2046 केतु 19/05/2046 शुक्र 24/08/2046 सूर्य 22/09/2046	मंगल 15/10/2046 राहु 15/12/2046 गुरु 07/02/2047 शनि 12/04/2047 बुध 08/06/2047 केतु 02/07/2047 शुक्र 08/09/2047 सूर्य 28/09/2047 चंद्र 01/11/2047	राहु 05/04/2048 गुरु 21/08/2048 शनि 02/02/2049 बुध 30/06/2049 केतु 29/08/2049 शुक्र 19/02/2050 सूर्य 12/04/2050 चंद्र 08/07/2050 मंगल 07/09/2050	गुरु 08/01/2051 शनि 03/06/2051 बुध 12/10/2051 केतु 05/12/2051 शुक्र 08/05/2052 सूर्य 23/06/2052 चंद्र 08/09/2052 मंगल 01/11/2052 राहु 20/03/2053	बुध 22/07/2053 केतु 12/09/2053 शुक्र 05/02/2054 सूर्य 21/03/2054 चंद्र 03/06/2054 मंगल 24/07/2054 राहु 03/12/2054 गुरु 30/03/2055 शनि 16/08/2055

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

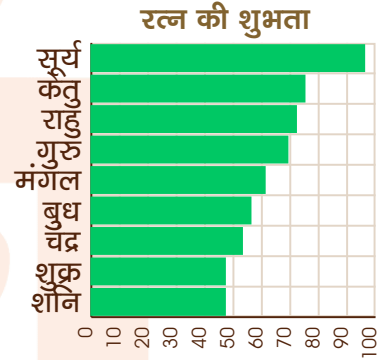
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	96%	सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	75%	भाग्योदय, दम्पति
गोमेद	राहु	72%	पराक्रम, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	61%	दम्पति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	56%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख
हीरा	शुक्र	47%	ग्रह कलेश, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट
नीलम	शनि	47%	शत्रु व रोग, व्यावसायिक हानि, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	20/03/1983	100%	59%	67%	56%	75%	22%	22%	59%	62%
चंद्र	20/03/1993	100%	66%	61%	62%	69%	47%	47%	59%	62%
मंगल	20/03/2000	100%	59%	73%	38%	75%	47%	47%	59%	81%
राहु	20/03/2018	83%	31%	47%	56%	69%	55%	55%	84%	62%
गुरु	20/03/2034	100%	59%	67%	38%	81%	22%	47%	72%	75%
शनि	20/03/2053	83%	31%	47%	62%	69%	55%	61%	78%	62%
बुध	20/03/2070	100%	31%	61%	69%	69%	55%	47%	72%	75%
केतु	20/03/2077	83%	31%	67%	56%	69%	55%	22%	59%	88%
शुक्र	20/03/2097	83%	31%	61%	62%	69%	61%	55%	78%	81%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/08/1982-06/10/1982	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	सन्तति कष्ट

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है अतः आप मांगलिक दोष से युक्त पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इससे आपका तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पत्नी के स्वभाव में उग्रता का भाव विद्यमान हो सकता है। इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखैश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब तो होगा परन्तु विवाह करने में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आनन्दपूर्वक सुखद वातावरण में आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होगा। आप दोनों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा फलतः विवाह के पश्चात् दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा। पत्नी के स्वभाव में उग्रता होने के कारण यदा कदा आपसी संबंधों में अल्प मात्रा में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु यह सब थोड़े समय के लिए रहेगा तथा परस्पर संबंध पूर्ववत् घनिष्ठ एवं मधुर रहेंगे।

आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्थित मंगल आपको योग्य जीवन साथी प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा तथा आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप एक मान सम्मान युक्त प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा समाज में पूर्ण रूप से यशार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी आप नित्य उन्नति करते रहेंगे। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा क्रोध के भाव की अधिकता भी दृष्टिगोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्य तथा सुख एवं

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा परन्तु यदा कदा अशान्ति या कलह का वातावरण भी अल्प काल के लिए उत्पन्न हो सकता है। विद्या प्राप्ति के क्षेत्र में भी आप हमेशा सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण सन्तोष एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे एवं एक भाग्यशाली पुरुष होकर धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा तथा सभी सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में आप सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या के सप्तम भाव में ही मंगल विद्यमान हो उस कन्या से विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए अच्छा नहीं रहेगा जिस का उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव होगा इससे आप दाम्पत्य जीवन का पूर्ण सुखोपभोग करने में परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल सभी कुप्रभावों को दूर करेगा। दाम्पत्य जीवन को सुखी तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः सोच विचार कर ही अन्तिम रूप से निर्णय लेना चाहिए।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान्, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान्, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान् रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल,

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु
(20/03/2018 - 20/03/2034)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 20/03/2018 को आरम्भ तथा 20/03/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

गुरु का आपके व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप संत की तरह धार्मिक होंगे तथा शिक्षित व्यक्ति की तरह ज्ञान की खोज में अपनी पसन्द के कारण अध्ययन से जुड़े रहेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(23/02/2025 - 30/01/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/03/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 23/02/2025 को प्रारंभ होकर 30/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

आपके इस अवधि में पिता से संबंध मधुर होंगे। नेकी के कार्य करेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। दूरदृष्टि और विवेक उत्तम होंगे। धन संचित होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। किसी विवाद में फंस सकते हैं। आर्थिक प्रगति होगी; धन और सुखसाधनों में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी के मार्ग में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपके पिता अध्यात्म में रुचि ले सकते हैं; घर से बाहर कहीं पर जीवनयापन कर सकते हैं। आपकी माता के रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारों से अनबन, सफलता, समृद्धि और सुख-साधनों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, नौकरी मिल सकती है, भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो नींव मजबूत होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को हिम्मत के साथ आगे बढ़ना श्रेयस्कर रहेगा; आय उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(30/01/2026 - 30/09/2028)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 20/03/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/01/2026 को प्रारंभ होकर 30/09/2028 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप सुखी रहेंगे। परिवारजनों और मित्रों से उत्तम संबंध रहेंगे। प्रसन्न और संतुष्ट होंगे। किस्मत चमकेगी; धनी बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। प्रभाव में वृद्धि होगी। प्रसिद्धि और सम्मान मिलेंगे। समाज में रुतबा बढ़ेगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। उत्तम मित्र होंगे, नये मित्र बनेंगे जो लाभकारी रहेंगे।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे; आय अच्छी होगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से

लाभ, शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; प्रभावशाली लोग सहायता करेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किसी भी काम में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(30/09/2028 - 20/07/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/03/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/09/2028 को प्रारंभ होकर 20/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे और सुख-सुविधाओं से संपन्न होंगे। सट्टेबाजी में धनार्जन हो सकता है। हाथ में लिये सब काम पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है; सरकार से लाभ होगा। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, धनागम होगा।

आपके जीवनसाथी की इच्छाएं पूर्ण होंगी, धनार्जन होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे। माता को धन का लाभ होगा; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, साहित्य या संचार माध्यम से लाभ, प्रोन्नति, वांछित स्थान पर तबादला, व्यापार में लाभ और उच्चाधिकारियों की कृपा का संकेत है।

आपकी संतान में आत्म-विश्वास उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तरक्की करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में भी कुछ परिवर्तन होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली उदर रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल गाय, वस्त्र, लाल चंदन और गुड़ का दान दें।

अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(20/07/2029 - 19/11/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/03/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

20/07/2029 को आरंभ होकर 19/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। कार्यालय सुविधासंपन्न रहेगा। मातहतों से संबंध उत्तम रहेंगे। स्पर्धी कम होंगे; उन पर विजय होगी। मामा से लाभ होगा। शारीरिक और मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। बारीकी के कार्य में सफल होंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। माता से संबंध मधुर रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, विदेश गमन भी संभव है। आपके पिता भाग्यशाली और धनी होंगे। माता को अपने भाई-बहनों से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, सुख-साधन और अप्रत्याशित घटनाओं का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, पारिवारिक जीवन सुखी हो सकता है, राजनीति में हिस्सा ले सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसन्न रहेंगे, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- गुरु - मंगल (19/11/2030 - 25/10/2031)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 20/03/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/11/2030 को प्रारंभ होकर वद 25/10/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा; धनी और शक्तिशाली बनेंगे। व्यापार में लाभ होगा। पारिवारिक जीवन में मामूली तनाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे, सफलता ओर प्रसन्नता मिलेंगी, शिक्षा उत्तम होगी। कटुवचन बोलने से बचें। आप बुद्धिमान और कल्पनाशील हैं। स्वयं के परिश्रम से धनी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का आत्म-विश्वास बढ़ेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति से आय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में प्रगति, निवेश से लाभ, यात्रा, सफलता और उत्साह के कारण प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी; साखर उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्वस्थ और धनी होंगे; भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे,
आय अच्छी होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ
करें।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382